क्या यूरोपीय परिषद का पालन करें यद्यपि वह खगोलीय गणना का उपयोग करती हो?

﴿ هل يتبعون المجلس الأوروبي ولو أخذ بالحساب الفلكي ﴾

[हिन्दी – Hindi – هندي]

मुहम्मद सालेह अल-मुनज्जिद

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2009 - 1430

islamhouse.com

﴿ هل يتبعون المجلس الأوروبي ولو أخذ بالحساب الفلكي ﴾

« باللغة الهندية »

محمد صالح المنجد

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2009 - 1430

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

क्या यूरोपीय परिषद का पालन करें यद्यपि वह खगोलीय गणना का उपयोग करती हो?

प्रश्न :

हम, ब्रिटेन में एक इस्लामी केन्द्र के प्रबंधक, यह चाहते हैं कि अपने केन्द्र में नमाज़ियों के लिए पवित्र रमज़ान के महीने की शुरूआत और अन्त की एक तिथि निर्धारित कर दें, हमारा लक्ष्य मुसलमानों को एकजुट करने का प्रयास है इस प्रकार कि इस विषय पर उनके विचार को एकजुट करने के लिए हम हर सम्भव प्रयास करते हैं, उन में से कुछ का दृष्टिकोण चाँद के दर्शन का एतिबार करना है, और कुछ लोगों का विचार खगोलीय गणना का पालन करने का है। और यूरोपीय फत्वा परिषद का भी इस विषय में एक विचार है, जबकि ज्ञात होना चाहिए कि यूरोप में मुसलमानों के लिए यही परिषद फत्वा जारी करती है।

हमारा प्रश्न यह है कि :

क्या हमें यूरोपीय परिषद का पालन करना चाहिए यद्यपि वह खगोलीय गणना पर चलती हो? या कि हमने अपने नगर की मस्जिदों में मुसलमानों को एकजुट करने का जो प्रयास किया है उसी पर बाक़ी रहें यद्यपि वह यूरोपीय परिषद के विचार के विरूद्ध हो?

उत्तर :

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए योग्य है।

रमज़ान के महीने की शुरूआत या उसके अन्त को सिद्ध करने के लिये खगोलीय गणना पर अमल करना जाइज़ नहीं है, अनिवार्य यह है कि चाँद के देखने पर अमल किया जाये जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : ''उसे (चाँद) देख कर रोज़ा रखो और उसे (चाँद) देख कर रोज़ा रखना बंद करो।'' इस हदीस को बुखारी (हदीस संख्याः 1909) और मुस्लिम (हदीस संख्याः 1081) ने रिवायत किया है।

मुसलमानों की इस बात पर सर्वसम्मति है कि जब आसमान साफ हो तो चाँद के दर्शन को छोड़ कर खगोलीय गणना पर अमल करना जाइज़ (वैध) नहीं है, किन्तु अगर आसमान में बादल हो तो कुछ विद्वानों ने विरलता अपनाते हुए (सर्वबहुमत का विरोध करते हुए) केवल गणना करने वाले के लिए खगोलीय गणना पर अमल करना वैध बताया है।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह फरमाते हैं :

''इस्लमाम धर्म में हम इस बात को आवश्यक रूप से जानते हैं कि रोज़ा, या हज्ज, या इद्दत, या ईला (बीवी से संभोग न करने की क़सम खाने)

या इनके अतिरिक्त अन्य अहकाम जो चाँद पर आधारित हैं उनके लिए चाँद के देखने के बारे में खगोल विज्ञानी की सूचना कि चाँद दिखायी देगा या दिखायी नहीं देगा, पर अमल करना जाइज़ नहीं है। इस संबंध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत सारे नुसूस (हदीसें) प्रमाणित हैं, और मुसलमानों की इस पर सर्वसम्मति है, और इस विषय में प्राचीन समय में बिल्कुल किसी मतभेद का पता नहीं चलता है, और आधुनिक समय में भी कोई मतभेद नहीं है, सिवाय इसके कि तीसरी शताब्दी के बाद अपने आपको धर्म–शास्त्री कहलाने वाले नये लोगों में से कुछ का यह भ्रम है कि जब चाँद पर बदली छा जाये तो खगोल विज्ञानी के लिए वैध है कि वह स्वयं अपने बारे में खगोलीय गणना पर अमल करे, अगर खगोलीय गण्ना से चाँद के देखे जाने का पता चलता है तो रोज़ा रखे, अन्यथा नहीं।

यह कथन यद्यपि आसमान पर बदली होने के साथ और खगोल विज्ञानी के साथ विशिष्ट है, परन्तु वह एक विरल कथन (सर्वसम्मति के विपरीत) है और इस से पहले उसके विरूद्ध पर इज्माअ़ (सर्व मुसलमानों का इत्तिफाक़) स्थापित हो चुका है, जहाँ तक इस कथन का अनुपालन आसमान साफ होने की हालत में करने, या इस पर सामान्य हुक्म आधारित करने की बात है, तो इस तरह की बात किसी मुसलमान ने नहीं कही है।'' (मजमूउल फतावा 25/132)

इस आधार पर आप लोगों के लिए उक्त परिषद का पालन करना जाइज़ नहीं है यदि वह खगोलीय गणना पर भरोसा करती है और चाँद देखने को आधार नही बनाती है।

तथा आप लोगों को चाँद देखने पर अमल करना चाहिए जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदेश है और इसी पर मुसलमानों की सर्वसम्मति है।

अल्लाह तआला आप लोगों को उस चीज़ की तौफीक़ दे जिस से वह प्यार करता और खुश होता है।

और अल्लाह ही सर्वश्रेष्ठ जानता है।

इस्लाम प्रश्न और उत्तर